राज्य स्तरीय आकलन

SA	1

सत्र – 2019–20

आदर्श उत्तर

कक्षा – 6 **विषय – सामाजिक विज्ञान**

माध्यम – हिन्दी **PAPER CODE –** 6 0 8 1

उ. क्र.	उत्तर

1. अ.

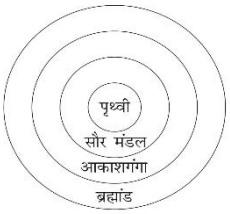

2. स. स्नान के लिए

3.

क्र.	स्वच्छता एवं सफाई	किसी व्यक्ति को दंड देना	जन्म मृत्यु की पंजीयन
ब.	√	×	√

4. द. 1 → 4 → 3 → 2

5. अ. सत्य के ज्ञान को

6.

क्र.	आयात	निर्यात
1	पेट्रोल, डीजल, दवाईयाँ	चावल, कोयला, लोहा इस्पात, कोसा और वनोपज

7. छायांकित भाग उष्ण कटिबंध को दर्शाता है। कर्क एवं मकर रेखा के बीच के सभी स्थानों पर सूर्य वर्ष में एक बार दोपहर में सिर के ऊपर होता है। इसलिए इस क्षेत्र में गर्मी अधिक होती है।

8.

नगर	प्राप्त अवशेष
लोथल	नाव एवं गोदी के अवशेष।
हड़प्पा	ईंट और मिट्टी के बर्तन, मकान और अन्नागार

9. किसी भी मानचित्र पर वास्तविक आकार और प्रकार जैसे – भवनों, सड़कों, पुल, रेल की पट्टरियों, कुँओं आदि को दिखाना सम्भव नहीं होता हैं। इसलिए वे अक्षरों, छायाओं, चित्रों तथा रेखाओं के उपयोग करकें दर्शाएँ जाते है। ये प्रतीक कम स्थान में अधिक जानकारी प्रदान करते हैं।

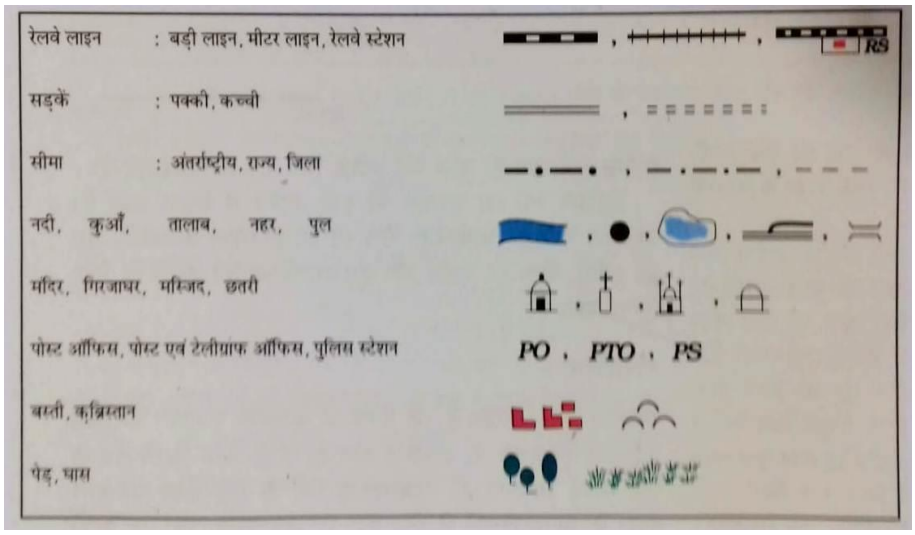

10. जिलाधीश का मुख्य कार्य–जिले में कानून व्यवस्था बनाये रखना है। इसलिए इसे दण्डाधिकारी भी कहा जाता है।

11.

तारे	ग्रह	उपग्रह
• तारे स्वयं प्रकाशित होते है। उनमें स्वयं की उष्मा होती है। सौरमण्डल में सैकड़ों तारे है ये हमसे बहुत दूर होने के कारण छोटे दिखाई देते हैं। **उदा.**–सूर्य भी एक तारा है।	• ग्रह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते है। • ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा अपने अक्ष पर भी घूमते हैं। **उदा.**– हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह है सूर्य से दूरी के अनुसार वे है– बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस तथा नेप्च्यून।	• ये भी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। • उपग्रह अपने ग्रह का चक्कर लगाते हैं तथा अपने अक्ष पर भी घूमते हैं। **उदा.**– चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है।

12. कचरे को निश्चित स्थान पर डालने से गंदगी नहीं फैलती। प्रदूषण से बचाव होता है तथा इससे अच्छी जैविक खाद तैयार होता है।

अथवा

नरवा का आशय– नदी–नाले, **गरूवा का आशय–**गायों की सुरक्षा **घुरुवा–** कंपोस्ट खाद एवं **बारी का आशय–** साग सब्जी उगाने का स्थान। इन चारों के विकास से ही गाँवों का विकास किया जा सकता है। पर्यावरण का संरक्षण हो सकता है तथा मनुष्य को स्वच्छ वातावरण एवं पौष्टिक खाद्यन्न की प्राप्ति हो सकती है।

13.

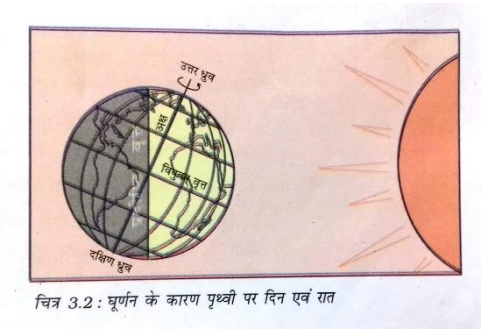

चित्र 3.2 : घूर्णन के कारण पृथ्वी पर दिन एवं रात

पृथ्वी की घूर्णन गति से दिन–रात होते हैं।

14.

जनसंख्या	संस्था	अधिकारी
5 हजार से 20 हजार	नगर पंचायत	मुख्य नगर पंचायत अधिकारी
20 हजार से 1 लाख	नगर पालिका	मुख्य नगर पालिका अधिकारी
1 लाख से अधिक	नगर निगम	आयुक्त

15. **शासन व्यवस्था–** महाजनपद काल में राजतंत्र शासन की व्यवस्था थी। इस व्यवस्था में शासन राजा द्वारा किया जाता था राजा का पद वंशानुगत होता था। लेकिन वज्जि (वैशाली), शाक्य (कपिलवस्तु) मल्ल आदि में गणतंत्र शासन व्यवस्था थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजा का चुनाव कुछ समय के लिए होता था। राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।

महानगर एवं व्यापार – इस काल में व्यापार का भी खूब विकास हुआ धातु (चांदी एवं तांबे) के सिक्कों का चलन शुरू हुआ। ये सिक्के धातु के टुकड़ों पर ठप्पा लगाकर बनाए जाते थे। यह आहत सिक्के कहलाते थे।

कर व्यवस्था – इस काल में सभी लोगों को कर देना पड़ता था। किसानों को अपनी उपज का छठवां हिस्सा कर के रूप में देना पड़ता था। शिल्पकारों को अपनी बनाई वस्तु के रूप में कर देना पड़ता था। व्यापारियों को भी वस्तु एवं नगद रूप में कर देना पड़ता था।

16.

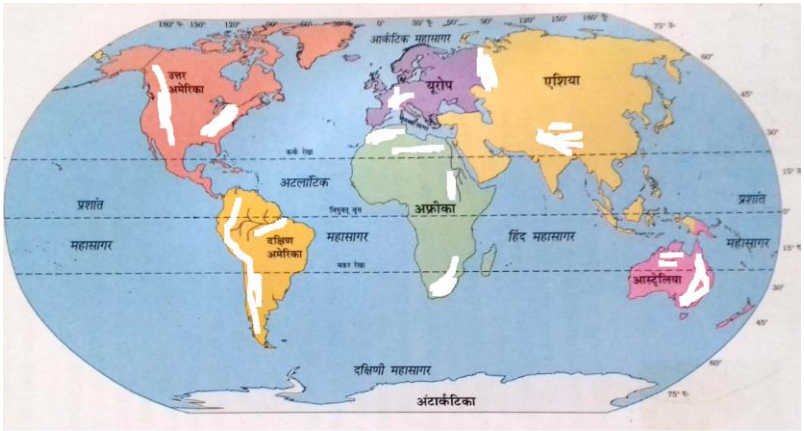

अथवा

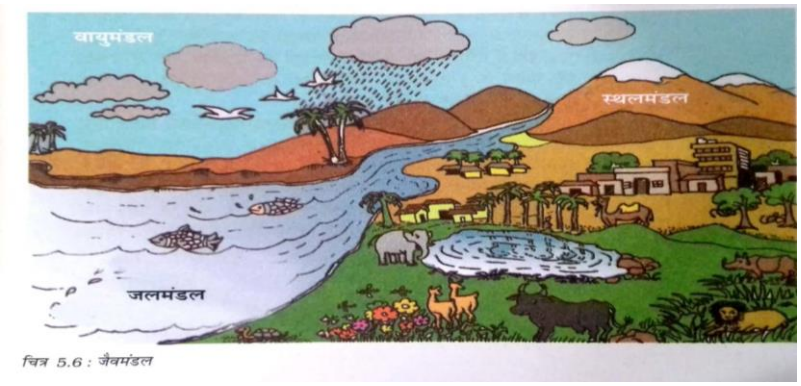

चित्र 5.6 : जैवमंडल

जैव मण्डल, जल, थल, वायु मण्डल के बीच का एक सीमित भाग है, जहाँ जीवन पाया जाता है। जैव मण्डल में संतुलन बनाने रखने के लिए संसाधनों के सीमित उपयोग की आवश्यकता है।

17. 1. **त्रिरत्न** –जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने जीवन में त्रिरत्न (यानी तीन रत्नों) को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। ये त्रिरत्न पंचमहाव्रत (यानी पांच व्रतों) के पालन करने से ही प्राप्त हो सकता है। इनका पालन करने से मनुष्य को ज्ञान तथा निर्वाण (जन्म एवं मृत्यु से मुक्ति) की भी प्राप्ति होती है। इन त्रिरत्नों में पहला था सत्य और असत्य का ज्ञान होना (सम्यक– ज्ञान) दूसरा सच्चा ज्ञान (सम्यक– दर्शन) और तीसरा था अच्छा कार्य करना और गलत कार्य त्यागना (सम्यक –चरित्र) इन त्रिरत्नों को प्राप्त करने के लिए जिन पांच महाव्रतों को पालन करना जरूरी था वे थे– सदा सत्य बोलना (सत्य) मन वचन एवं कर्म से हिंसा ना करना (अहिंसा) चोरी ना करना (अस्तेय) धन का संग्रह न करना (अपरिग्रह) अपने इंद्रियों को वश में रखना (ब्रह्मचर्य) महावीर स्वामी ने अहिंसा पर विशेष जोर दिया था।

2. **चार आर्य सत्य** –बौद्ध धर्म के अनुसार चार प्रमुख सच्चाइयों (चार आर्य सत्य) को हमेशा याद रखना चाहिए। ये सच्चाइयाँ की बौद्ध धर्म के मूल आधार है।

   ये हैं– संसार में दुख है (दुख का सत्य) दुख का प्रमुख कारण तृष्णा (तीव्र इच्छा) है। तृष्णा का त्याग कर दुख से छुटकारा पाया जा सकता है। सही आचरण एवं सभी बातों से मध्यम मार्ग अपनाकर दुख पर विजय (निर्वाण) पाया जा सकता है। इसके आधार पर यह लगता है कि बुद्ध ने अपने अनुयायियों को बीच का रास्ता अपनाने को कहा है अर्थात ना अधिक तय और ना ही अधिक भोग– विलास करना चाहिए। बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। बौद्ध धर्म ने जात–पात, ऊँच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया। बुद्ध ने ईश्वर और आत्मा दोनों को नहीं माना।

3. **पंचमहाव्रत** –जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने जीवन में त्रिरत्न (यानी तीन रत्नों) को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। ये त्रिरत्न पंचमहाव्रत (यानी पांच व्रतों) के पालन करने से ही प्राप्त हो सकता है। इनका पालन करने से मनुष्य को ज्ञान तथा निर्वाण (जन्म एवं मृत्यु से मुक्ति) की भी प्राप्ति होती है। इन त्रिरत्नों में पहला था सत्य और असत्य का ज्ञान होना (सम्यक– ज्ञान) दूसरा सच्चा ज्ञान (सम्यक– दर्शन) और तीसरा था अच्छा कार्य करना और गलत कार्य त्यागना (सम्यक –चरित्र) इन त्रिरत्नों को प्राप्त करने के लिए जिन पांच महाव्रतों को पालन करना जरूरी था वे थे– सदा सत्य बोलना (सत्य) मन वचन एवं कर्म से हिंसा ना करना (अहिंसा) चोरी ना करना (अस्तेय) धन का संग्रह न करना (अपरिग्रह) अपने इंद्रियों को वश में रखना (ब्रह्मचर्य) महावीर स्वामी ने अहिंसा पर विशेष जोर दिया था